राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

संख्या–96/2025

प्रेस–विज्ञप्ति

राजभवन में राजभवन–नालंदा विश्वविद्यालय व्याख्यानमाला कार्यक्रम का आयोजन किया गया

पटना 13 अक्टूबर, 2025 :– राजभवन के दरबार हॉल में आज राजभवन–नालंदा विश्वविद्यालय व्याख्यानमाला कार्यक्रम के अंतर्गत ''Atmanirbharta and Make America Great Again (MAGA) in a Multipolar World'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खां ने कहा कि "अमेरिका को फिर से महान बनाओ (MAGA- Make America Great Again)" का विचार, चाहे राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दिया हो या किसी और ने, परंतु यह अमेरिकी विदेश विभाग के नीति नियोजन स्टाफ के निदेशक जॉर्ज केनन द्वारा 1948 में कही गई बातों की याद दिलाता है। केनन ने स्पष्ट लिखा था कि अमेरिका के पास विश्व की 50 प्रतिशत संपत्ति और केवल 6 प्रतिशत जनसंख्या है, और उसकी वास्तविक नीति इस असमानता को बिना राष्ट्रीय सुरक्षा को क्षति पहुँचाए बनाए रखना है। केनन ने मानवाधिकार, लोकतंत्र या जीवन स्तर में सुधार जैसे आदर्शों को "भावुक कल्पनाएँ" कहा और केवल शक्ति एवं राष्ट्रीय हितों पर ध्यान देने की बात की। राज्यपाल ने कहा कि यही मानसिकता "मेक अमेरिका ग्रेट अगेन" जैसे नारों की जड़ है। यह एक प्रकार से खोए हुए प्रभुत्व को पुनः पाने की आकांक्षा को दर्शाता है।

राज्यपाल ने कहा कि इसके विपरीत, भारत की सभ्यता शक्ति से अधिक संस्कृति, विनम्रता और आत्मसंयम पर आधारित रही है। हमारे वेदों और उपनिषदों ने हजारों वर्ष पहले प्रत्येक प्राणी में ईश्वरत्व की पहचान की। अहम् ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म तथा प्रज्ञानं ब्रह्म– ये चार महावाक्य भारत की आत्मा हैं। जहाँ पश्चिम ने 1948 में मानव गरिमा को स्वीकार किया, वहीं भारत ने प्रारंभ से ही मानवता में दिव्यता देखी।

आगे पृष्ठ... 2 पर

उन्होंने कहा कि महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण का दुर्योधन के राजभोज को ठुकराकर विदुर के सादे भोजन को स्वीकार करना इस आत्मनिर्भरता की गहराई को दर्शाता है। इससे स्पष्ट होता है कि नैतिकता और सादगी भौतिक वैभव से श्रेष्ठ हैं। विदुर का साहस उनकी स्वतंत्रता और धर्मनिष्ठा से उपजा था। उन्होंने कहा कि भारत की पहचान सदैव ज्ञान और विवेक से रही है। प्राचीन विद्वानों जैसे तबरी और इब्न खल्दून ने भी भारत को "ज्ञान और बुद्धि की भूमि" कहा है।

राज्यपाल ने स्वामी विवेकानंद की बातों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत के दो आदर्श त्याग और सेवा हैं। यदि हम इन्हें जीवन में उतारें, तो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पुनर्जागरण स्वतः संभव है। सच्ची आत्मनिर्भरता केवल अर्थनीति नहीं, बल्कि आत्मबल, नैतिकता और संस्कृति की पुनर्स्थापना है।

उन्होंने कहा कि हर भारतीय का दायित्व है कि वह लोककल्याण के लिए अपने भीतर का "अमृत" जगाए। यही भारत को वास्तव में आत्मनिर्भर और महान बनाएगा।

विवेकानंद इंटरनेशनल फाउण्डेशन के उपाध्यक्ष एवं भारती रिजर्व बैंक के केन्द्रीय बोर्ड के पार्ट टाइम निदेशक तथा मुख्य वक्ता श्री एस० गुरूमूर्ति ने विषयवस्तु पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने अनेक लोगों के जिज्ञासा का समाधान भी किया। नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० सचिन चतुर्वेदी ने विषयवस्तु से परिचय कराया।

कार्यक्रम में भारत सरकार एवं राज्य सरकार के वरीय पदाधिकारीगण, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, नालंदा विश्वविद्यालय के शिक्षकगण एवं विद्यार्थीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

.....